संपादकीय

आत्मबल की शक्ति से जीवन की राह

इमर्सन ने एक बार कहा था, 'हमारी शक्ति यां हमारी कमजोरियों से उत्पन्न होती हैं।' जब व्यक्ति स्वयं को एक ऐसे स्थान पर पाता है जहां पर उसके पास अपनी शक्ति यों को एकत्रित करने के सिवाय कुछ नहीं होता, तब उसकी शक्ति यां एकत्रित होकर विस्फोट करती हैं और उस विस्फोट से चमत्कार होता है। बस उस चमत्कार को करने के लिए विश्वास, ध्यान एवं संघर्ष की शक्ति चाहिए होती है। यह चमत्कार किसी भी तरह का हो सकता है।

हाल ही में यह चमत्कार घटित हुआ थाईलैंड की गुफा थाम लुआंग गुफा में। थाईलैंड के 25 साल के कोच एकापोल चानथ्वांग एवं उनके बारह खिलाड़ी थाम लुआंग गुफा में जिस तरह जीवन के लिए 18 दिनों तक लगातार संघर्ष करते रहे, उसके बारे में कल्पना करते ही सिहरन होने लगती है। अंधेरी गुफा, सीलन एवं बदबूदार जगह जहां पर लगातार वर्षा के पानी का स्तर बढ़ता गया, ऑक्सीजन का स्तर घटता गया। कीचड़ एवं पानी ने बच्चों व कोच को अपने शिकंजे में जकड़ना प्रारंभ कर दिया। उस समय भूख और एक-एक सांस के लिए लड़ते हुए कोच एवं बच्चों ने जिस जिजीविषा के साथ उस संकरी गुफा में मृत्यु को पराजित किया, उससे यह तो स्पष्ट हो गया है कि मनुष्य के अंदर अपार शक्ति का स्रोत है। यह शक्ति प्रत्येक मानव के अंदर है, बस मनुष्य ही अपनी इस शक्ति को जागृत करने का पूरा प्रयास नहीं करता।

प्रसिद्ध लेखक प्रेंटिस मलफोर्ड भी यह स्वीकार करते हैं कि 'एक सर्वोच्च और नियंत्रणकारी शक्ति इस असीम ब्रह्माण्ड में फैली हुई है और इस पर शासन करती है। आप इस शक्ति का हिस्सा हैं।' कोच एकापोल चानथ्वांग बचपन से ही गहरे दुखों का सामना कर चुके थे। दस वर्ष की आयु तक आते-आते उन्होंने अपने माता-पिता और छोटे भाई को मृत्यु को देखा था। बौद्ध मठ में जाने के बाद उन्होंने ध्यान की अवस्था में पहुंचकर स्वयं को सकारात्मक विचारों से प्रेरित किया। दस वर्ष बिताने के बाद वे गरीब एवं अनाथ बच्चों को फुटबॉल का प्रशिक्षण देने लगे।

ध्यान, अध्यात्म एवं सकारात्मक विचारों की श्रृंखला जब व्यक्ति के हृदय का अंग बन जाती है तो वह कठिन परिवेश में भी रहना सीख जाता है। यही ध्यान, अध्यात्म एवं सकारात्मक विचार संकरी गुफा में एकापोल की ताकत बने और उन्होंने नन्हे मासूम बच्चों को जिंदगी के प्रति आशा न छोड़ने के लिए प्रेरित किया। वे बच्चों को उन व्यक्ति यों और बातों के बारे में बताते रहे, जिन्होंने कठोर परिस्थितियों में जीवन की जंग जीती थी। बच्चों को न ही तैराकी का ज्ञान था, न ही भूख बर्दाश्त करने का और न ही लगातार अंधेरे में रहने का। जब बच्चों ने रोना, चीखना, चिल्लाना प्रारंभ किया तो एकापोल ने उन्हें द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान की एक घटना के बारे में बताते हुए कहा कि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान एड्डी रिकेनबैकर समुद्र में इक्कीस दिनों तक पटिट्यों पर तैरते रहे थे। जब 21 दिनों बाद वे समुद्र से जीवित निकल आए तो पूरा विश्व दंग रह गया। उन्होंने उनके साहस की सराहना करते हुए कहा, 'आखिर इस घटना से आपने क्या सीखा?'

जब व्यक्ति दुष्कर परिस्थितियों से जूझते हुए शिकायतें कम कर देता है तो उसका मस्तिष्क तेजी से समाधान की ओर केंद्रित होता है। 18 दिनों तक मौत से लड़ते हुए आखिर सभी तेरह लोगों को जीवित बाहर निकाल लिया गया। इन तेरह लोगों ने बुरी से बुरी परिस्थिति को मात देते हुए जिंदगी की जंग को जीत लिया। इस तरह फुटबॉल की यह जूनियर टीम 13-0 से विजयी रही। बच्चों एवं कोच की दरियादिली और हौसले ने यह साबित कर दिया कि यदि सकारात्मक तरीके से कठिन से कठिन परिस्थिति में धैर्य और विश्वास के साथ आगे बढ़ा जाए तो सफलता तो क्या मौत के मुंह से भी बाहर आया जा सकता है। थाईलैंड की इस फुटबॉल टीम ने पूरे विश्व को एक बहुत बड़ी सीख दी है कि मानवता में जब मानवीयता का समावेश हो जाता है तो हर ओर विजय एवं जीत होती है और मृत्यु को भी पराजित होकर लौटना पड़ता है। चमत्कार होता है, हर बार होता है बस उस चमत्कार को दुनिया के सामने लाने के लिए व्यक्ति को आम व्यक्ति यों से कुछ अधिक संघर्ष एवं जुनून को अपने अंदर उतारना पड़ता।

आखिर क्यों नही कायम कर पाई महबूबा अपने विधायकों पर विश्वास ?

जम्मू कश्मीर में तीन साल तक सत्ता में रहे भाजपा -पीडीपी गठबंधन से भाजपा द्वारा रिश्ता तोड़ लिए जाने के बाद पीडीपी की मुखिया महबूबा मुफ्ती को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने के लिए विवश होना पड़ा। इसके बाद किसी भी दल अथवा गठबंधन के बाद पास बहुमत न होने के कारण राज्य में राष्ट्रपति शासन लगाना पड़ा। राज्य विधानसभा छह माह के लिए निलंबित कर दी गई है। पीडीपी का साथ देने के लिए कांग्रेस और नेशनल कांफ्रेस तैयार नही है। नेशनल कांफ्रेंस तो राज्य में जल्द ही विधानसभा चुनाव कराने के पक्ष में है ,किन्तु राज्य में अभी कानून व्यवस्था की स्थिति चुनाव के अनुकूल नही है।

आतंकी हमलों की घटनाओं में रमजान के पवित्र महीने जो बढ़ोतरी हुई थी,उसके लिए मेहबूबा मुफ़्ती के पास कोई संतोषजनक जवाब नही था, जबकि रमजान के दौरान आपरेशन आल अभियान को स्थगित रखने की मांग उन्होंने ही कि थी। वे तो अमरनाथ यात्रा के दौरान भी ऑपरेशन स्थगित रखने के

पक्ष में थी, परंतु रमजान महीने में जिस तरह से आतंकी घटनाओं में बढ़ोतरी हुई थी उसके बाद केंद्र सरकार को पुनः अभियान शुरू करने की अनुमति देनी पड़ी। इसी के कुछ दिन बाद भाजपा ने सत्तारूढ़ गठबंधन से बाहर आने का फैसला कर लिया था।

मुख्यमंत्री की कुर्सी जाने के बाद पहले तो महबूबा कुछ दिनों तक चुप रही,परंतु धीरे-धीरे उन्हें यह अहसास होने लगा कि उनकी ही पार्टी के कुछ विधायक मुख्यमंत्री के रूप में उनकी कार्यशैली से खुश नही थे। ऐसे विधायक पार्टी का साथ छोड़ सकते है तो मेहबूबा बोखला उठी। उन्हें अब यह डर सताने लगा कि ये असंतुष्ट विधायक कही भाजपा से न जाकर मिल जाए ,जिससे भाजपा सरकार बनाने में सफल हो जाए। मेहबूबा मुफ़्ती अपनी गलतियों को स्वीकारने की बजाय भाजपा पर पीडीपी को तोड़ने का आरोप लगा रही है।

अपने विधायकों को एकजुट रखने में नाकाम मेहबूबा ने केंद्र सरकार को धमकी दे डाली है कि अगर पार्टी को तोड़ने की कोशिश की गई तो इसके परिणाम खतरनाक होंगे। मेहबूबा मुफ़्ती ने कहा कि 1987 में लोगो ने मुस्लिम संयुक्त मोर्चा के पक्ष में मतदान किया था,लेकिन नई दिल्ली ने दखल देकर उसे तोड़ दिया था, जिसके परिणाम के रूप में अलगांववादी नेता यासीन मलिक एवं आतंकी संगठन हिज्बुल मुजाहिदीन के सरगना सैयद सलाउद्दीन को उभरने का मौका मिला था। 1987 के चुनावों में सलाउद्दीन का पोलिंग एजेंट यासीन मलिक ही था। सलाउद्दीन बाद में पाकिस्तान चला गया था। महबूबा उस दौर को एक बार फिर दोहराने की धमकी दे रही है। मेहबूबा पार्टी में फूट का ठीकरा भाजपा के सिर पर फोड़ना चाहती है, जबकि इस स्थिति के लिए वह स्वयं जिम्मेदार है। उन्होंने अगर ईमानदारी से गठबंधन धर्म निभाया होता तो राज्य में उनकी सरकार कार्यकाल पूरा कर सकती थी । मेहबूबा का अपना अलग एक एजेंडा था। मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने के बाद उन्होंने कहा भी था कि उन्होंने अपना एजेंडा पूरा कर लिया है। मुफ़्ती ने सलाउद्दीन एवं यासीन मालिक का नाम लेकर और भी खतरनाक परिणाम की जो धमकी दी थी उससे तो यही हकीकत का अनुमान लगाया जा सकता है कि मेहबूबा की सहानुभूति इन जैसे लोगो के प्रति जैसी पूर्व में थी उसमे कोई कमी नही आई है। पाकिस्तान के प्रति भी उनकी हमदर्दी पहले जैसी ही है। कश्मीर पर किसी भी तरह की बातचीत में वह पाकिस्तान को शामिल करने की वकालत हमेशा करती रही थी। उनके पिता स्व मुफ़्ती मोहम्मद सईद तो जम्मू कश्मीर में शांतिपूर्ण चुनाव संपन्न होने का श्रेय पाकिस्तान को दे चुके है।

साझा प्रयासों से मातृत्व रक्षा की पहल

भारत जैसे विशाल आबादी वाले देश में हेल्थकेयर एक बड़ी चुनौती है और यह इसलिए भी कि यहां स्वास्थ्य सेवाओं पर खर्च बहुत कम है। हम अपनी कुल जीडीपी का महज 1.3 प्रतिशत इस पर खर्च करते हैं। दुनिया भर के देश इस पर औसतन 6 प्रतिशत खर्च करते हैं। स्वास्थ्य पर खर्च के मामले में पाकिस्तान और बांग्लादेश भी हमसे आगे हैं। अब भारत सरकार 2025 तक इस खर्च को बढ़ाकर 2.5 प्रतिशत करने की योजना बना रही है।

दरअसल, देश को लोक कल्याणकारी योजनाओं पर बहुत बड़ी रकम खर्च करनी होती है। गांवों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए काफी कुछ करना होता है। इसका ही नतीजा है कि इस बार वित्तीय बजट में रक्षा पर 1.58 प्रतिशत ही खर्च हो रहा है जबकि भारत दो-दो दुश्मनों से घिरा हुआ है। ज़ाहिर है कि स्वास्थ्य सेवाओं पर खर्च इससे ज्यादा संभव नहीं हो सकेगा। लेकिन इस बजट में सरकार ने 10 करोड़ से ज्यादा परिवारों के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य संरक्षण अभियान के तहत पांच लाख रुपए प्रति परिवार की घोषणा की है, जिससे हालात में सुधार की

संभावना है।

ऐसे में देश को निजी क्षेत्र के सहारे की जरूरत पड़ रही है और उसके ही प्रयासों से हेल्थकेयर पर कुल खर्च जीडीपी का 3.9 प्रतिशत हो रहा है। यह देश के लिए राहत की बात है। इतना ही नहीं, कई स्तरों पर व्यक्तिगत प्रयासों से भी काफी कुछ हो रहा है। डब्ल्यूएचओ, यूनिसेफ वगैरह जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं तथा देश के कई संगठनों के प्रयासों से इस दिशा में उल्लेखनीय परिणाम सामने आए हैं। इनके अलावा भी कई कर्मयोगियों ने चुपचाप रहकर ऐसे काम किए हैं कि हैरानी होती है। सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही है कि मातृत्व से जुड़ी मृत्यु दर में उल्लेखनीय कमी आई है। सैंपल रजिस्ट्रेशन सर्वे 2016 के मुताबिक स्वास्थ्य सेवाओं में पिछड़े हुए राज्य भी इस दिशा में काफी सफल हुए हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार, असम, मध्य प्रदेश, हरियाणा जैसे राज्यों ने मातृत्व मृत्यु दर कम करने में काफी सफलता पाई है। यह संभव हुआ है पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप से, जिसमें कर्मयोगियों की भूमिका भी सराहनीय रही है। इसमें अलग-अलग राज्यों के डॉक्टरों ने जबरदस्त भूमिका निभाई है। प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व योजना के तहत 1.30 करोड़ गर्भवती माताओं की 12,900 डिस्पेंसरियों में जांच हुई और तकरीबन साढ़े छह लाख को जोखिम वाला माना गया। इस तरह से उनके प्राणों की रक्षा की गई। यह उपलब्धि अकेले सरकार के बूते संभव नहीं थी। यह संभव हुआ सुदूर सोनभद्र की डॉक्टर विभा आगस्टीन, नक्सल प्रभावित बस्तर में काम करने वाली डॉक्टर पूजा उपाध्याय, कर्नाटक के बीदर की डॉक्टर सुमन भल्के, केरल के कासरगोड़ जिले की डॉक्टर अर्चना जैसी दर्जनों कर्मयोगी डॉक्टरों के कठिन परिश्रम और लगन से। उनके अलावा सैकड़ों और डॉक्टरों तथा स्वास्थ्यकर्मियों ने इस काम में हाथ बंटाया। कई संस्थाओं की भूमिका बेहद प्रभावशाली रही है और उन्होंने बिना किसी आर्थिक मदद के अपने बूते इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया।

विकास की कीमत

इंसान धरती के संसाधनों को इतनी तेजी से खपा रहा है कि इसकी क्षतिपूर्ति वह कर ही नहीं सकता। इस बात को सिद्धांत रूप में हम दशकों पहले से जानते हैं, पर अंतरराष्ट्रीय रिसर्च संगठन ग्लोबल फुटप्रिंट नेटवर्क (जीएफएन) ने बाकायदा गणना करके बताया है कि हमारे बिना विचार के उपभोग के चलते पृथ्वी के संसाधनों के खात्मे की तारीख कितनी तेजी से करीब आती जा रही है।

जीएफएन अपनी सालाना रिपोर्ट के जरिए बताता है कि पृथ्वी हर साल अपने संसाधनों का कितना हिस्सा पुनर्निर्मित कर सकती है और इंसान उसकी इस क्षमता से कितने ज्यादा संसाधन हर साल खपा देता है। यह सिलसिला शुरू हुआ 70 के दशक से। उसके बाद कुछेक अपवादों को छोड़कर साल-दर साल उल्लंघन का दायरा बढ़ता ही गया है।

20 साल पहले हाल यह था कि साल भर के संसाधनों का कोटा 30 सितंबर तक पूरा हो जाता था। इस तारीख को ओवरशूट डे कहा गया। दस साल में यह तारीख खिसक कर 15 अगस्त तक आ गई। इस साल यह पिछले साल के मुकाबले दो दिन और पीछे खिसक कर 1 अगस्त हो गई है। यानी साल के बचे हुए 5 महीने जो संसाधन खपेंगे, वह भविष्य से लिया जाने वाला कर्ज हैं।

कहने की जरूरत नहीं कि भविष्य की कीमत पर वर्तमान को चकाचक बनाए रखने की यह प्रवृत्ति सर्वनाश के पल को तेजी से करीब लाती जा रही है। अच्छी बात यही है कि यह प्रक्रिया अभी बेकाबू नहीं हुई है। सचेत प्रयासों के जरिये इसे पलटा जा सकता है।

चूंकि संसाधनों की यह खपत सीधे तौर पर विकास की हमारी गति से जुड़ी है, इसलिए ज्यों ही विकास की रफ्तार किसी वजह से धीमी पड़ती है, इस मोर्चे पर राहत मिलने लगती है। 2007-08 की मंदी ने ओवरशूट डे को पांच दिन आगे धकेल दिया था। पर किस देश की कौन सी सरकार हमारे परिवहश को बचाने के लिए मंदी को आमंत्रित करना चाहेगी/ कोई नहीं। रोजी-रोजगार, काम-धंधा, विकास तो हर किसी को चाहिए। लेकिन क्यों न सरकारें जीडीपी नापते समय यह भी दर्ज करना शुरू करें कि उसकी वह रफ्तार संसाधनों की कितनी बर्बादी की कीमत पर हासिल हुई है।

खाना खजाना

जीतें सबका दिल इसे खिला के

सामग्री –

250 ग्राम आलू (उबले हुए), 250 ग्राम मैदा, 250 ग्राम दही, 4 बड़े आकार के प्याज, 2 छोटे चम्मच लालमिर्च, 1 इंच अदरक, 50 ग्राम गुड़, 100 ग्राम इमली, हरीमिर्च, हरा धनिया, जीरा पीसा हुआ, स्वादानुसार नमक, मोयन व तलने के लिए तेल।

विधि –

- सबसे पहले मैदे में मोयन डालकर आटे की तरह गूंथ लें।

-अब मैदे के आटे की लोई बनाकर बेल लें। फिर उसे एक उल्टी कटोरी पर रखकर कटोरी का आकार दें।

-एक कड़ाही में तेल गरम करके आटे को कटोरी सहित तलने के लिए डाल दें, तल जाने पर कटोरी अपने आप ही अलग हो जाएगी। बस अब आपकी मैदे की कटोरी तैयार है।

-उबले आलू को मैश कर लें, उसमें लाल मिर्च, नमक, थोड़ा-सा पीसा जीरा, हरा धनिया मिलाकर मसाला तैयार कर लें।

-तत्पश्चात इमली व गुड़ को आधा घंटा पानी में भिगो दें और दोनों को मिक्सी में पीसकर छान लें। दोनों का अर्क तैयार होने पर उसमें काला नमक, पीसा जीरा व थोड़ी-सी मिर्च पावडर डाल दें, अब आपकी इमली की मीठी चटनी तैयार है।

- अब मैदे की कटोरी को एक प्लेट में रखें, उसमें तैयार आलू का मसाला, इमली की चटनी तथा दही डाल दें। ऊपर से मसाला बुरकाएं और अंत में बारीक कटे प्याज व हरे धनिया से सजा दें। आप चाहे तो ऊपर से सेंव बुरका कर नींबू के साथ चटपटी कटोरी चाट पेश करें।

शब्द सामथर्य

बाएं से दाएं

1. रूचिकर लगने वाली, रूचि के अनुकुल, चुनी हुई 3. राजाओं के बैठने का आसन 6. श्रमिक 7. कार्य, काज 9. वाद्ययंत्र आदि बजाने वाला 10. सहारा, सहायक वस्तु 11. शर्म, लाज, हया 12. मक्खन, माखन 14. श्रीमती राबड़ी देवी इस प्रदेश की मुख्यमंत्री हैं 15. चंद्रमा, रजनीश, चांद 18. पुस्तक 20. अवधि, समय 21. तर्क वितर्क और कहा–सुनी, जबानी झगड़ा 22. सूरत, आकार 23. झुका हुआ, नत।

ऊपर से नीचे

1. पंद्रह दिन का समय, शुक्ल या कृष्ण पक्ष 2. आग बुझाने की मशीन 3. हिंदु विवाहित स्त्री के मांग में भरने का लाल चूर्ण 4. पराजय, माला 5. मुंह ढकने का कपड़ा, घुंघट 8. चंदन, दक्षिण का एक पर्वत 10. व्यवस्थित करना, सजाना, स्वभाव आदि का परिष्कार, शुद्ध संबंधी कृत्य 12. विशालता, बड़प्पन, महान होने का भाव 13. अड़चन, रुकावट 15. जमीन के अंदर गहरा और लंबा रास्ता, अच्छे रंग का 16. बेवकूफ, मूर्ख, अहमक 17. औसत के हिसाब से 18. कृषक 19. अधिक, ज्यादा।

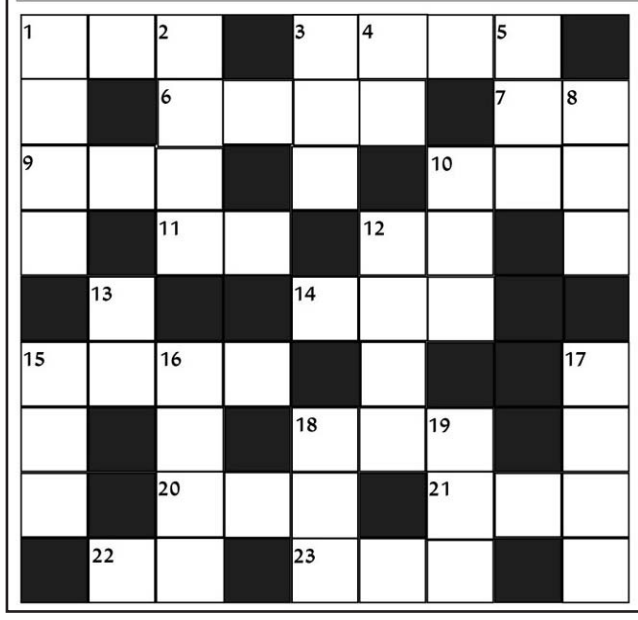

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 79 का हल

ज	ल	■	आ	वा	जा	ही	■	■
मा	■	खू	ब	■	दू	र	स्थ	■
ना	दा	न	■	सा	ग	■	ल	क्ष्य
■	न	ख	■	त	र	ल	■	■
■	वी	रा	न	■	■	च	ट	क
■	र	ब	■	आ	ज	क	ल	■
■	■	■	आ	ग	■	दा	ना	■
■	अ	ग	र	म	ग	र	■	क्रो
भा	भी	■	ती	न	■	■	व	ध

सू-दोकू

		3					7	
9				6		3		8
	7		9		5		6	
						1		9
3		8		7			5	
	1		3		9			7
		2		8		7		
	8				2		4	3
			1					

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.79 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6

राशिफल

मेष : गणेशजी कहते हैं कि आज विचारों की गतिशीलता से दुविधा का अनुभव हो सकता है। आज का दिन आपके लिए नौकरी-धंधे के क्षेत्र में स्पर्धायुक्त रहेगा और उस में से बाहर आने की कोशिश करते रहेंगे।

वृषभ : मानसिक रूप से उलझन में रहेंगे। आपके जिद्दी स्वभाव को आज त्याग दें, नहीं तो किसी के साथ वाद-विवाद हो सकता है। आज लेखक, कारीगर और कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलेगा।

मिथुन : ताजगी के अनुभव के साथ आज दिन की शुरुआत होगी। घर या कहीं बाहर दोस्तों तथा परिवार के लोगों के साथ आपको मनपसंद खाना खाने का अवसर मिल सकता है। अच्छे कपड़े पहनकर बाहर जाने का प्रसंग बनेगा। आर्थिक लाभ मिलने के योग हैं।

कर्क : ज्यादा खर्च ना हो, इसका ध्यान रखें। कुटुंबीजनों और सहकर्मियों के साथ मनमुटाव हो सकता है। मन में अनेक प्रकार की अनिश्चितता के कारण मानसिक बेचैनी हो सकती है। क्रोध पर संयम रखें, अन्यथा किसी के साथ वाद-विवाद हो सकता है। सेहत का ध्यान रखें।

सिंह : समय पर निर्णय ना ले पाने के कारण आप अच्छा मौका हाथ से गंवा सकते हैं। विचारों में आपका मन अटका हुआ रहेगा। मित्र वर्ग की तरफ से आज आपको लाभ मिलेगा। व्यापार में लाभ होगा। संतान से मुलाकात होगी। अच्छा भोजन प्राप्त होगा।

कन्या : वर्तमान समय में नए कार्यों से संबंधित सफल आयोजन आप कर सकेंगे। व्यापारी वर्ग और नौकरीपेशा वालों के लिए आज का दिन लाभदायक रहेगा। उच्च अधिकारियों की कृपा दृष्टि से प्रमोशन की संभावना दिखाई देगी। व्यापार में लाभ होगा। गृहस्थ जीवन में आनंद का माहौल रहेगा।

तुला : नौकरी पेशा करने वालों को उच्च वर्ग के अधिकारियों की नाराजगी सहनी पड़ सकती हैं। किसी बाहर वाले की वजह से व्यवसाय में परेशानी आ सकती हैं। संतान के भविष्य को लेकर चिंता हो सकती है। धार्मिक यात्रा का योग है। प्रतिस्पर्धियों के साथ वाद-विवाद टालें।

वृश्चिक : क्रोध पर सयंम रखें। अनैतिक कार्यों से दूर रहें, नए सम्बन्ध बनाने से पहले सोचें। धन खर्च ज्यादा होने से आर्थिक परेशानी का अनुभव कर सकते हैं। अपने काम को समय से पूरा करें। खाने-पीने का ध्यान रखें।

धनु : आज बौद्धिक तार्किक विचारों के लिए समय बहुत अच्छा है। समाज में मान-सम्मान मिलेगा। मित्रों के साथ मुलाकात होगी। उनके साथ घूमने-फिरने या मनोरंजन स्थल पर जाने का आनंद मिलेगा। साझेदारों से लाभ होगा।

मकर : आज आपको व्यापार में सफलता मिलेगी लेकिन कानून के चक्कर में ना पड़ें, उसका ध्यान रखें। व्यापार के लिए बनाई हुई योजना सफलतापूर्वक संपन्न होगी। पैसों की लेन-देन सफल रहेगी। धन लाभ योग है। कार्य में यश मिलेगा।

कुंभ : लेखनकार्य अच्छी तरह से कर सकेंगे। आपके विचार किसी एक बात पर स्थिर नहीं होंगे तथा उसमें लगातार परिवर्तन होते रहेंगे। संतान के भविष्य को लेकर चिंता हो सकती हैं। हो सके तो नए काम की शुरुआत आज न करें। आकस्मिक खर्च हो सकता हैं।

मीन : मकान-वाहन के दस्तावेजों को संभालकर रखें। परिवार का माहौल ना बिगड़े, इसका पूरा ध्यान रखें। माता के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। धन की हानि ना हो, इसके लिए सोच-समझकर निर्णय लें। महिलाओं के साथ व्यवहार में सावधानी रखें।